दिवाकर चित्रकथा

बुद्धिनिधान अभयकुमार

अंक ६

मूल्य 20.00

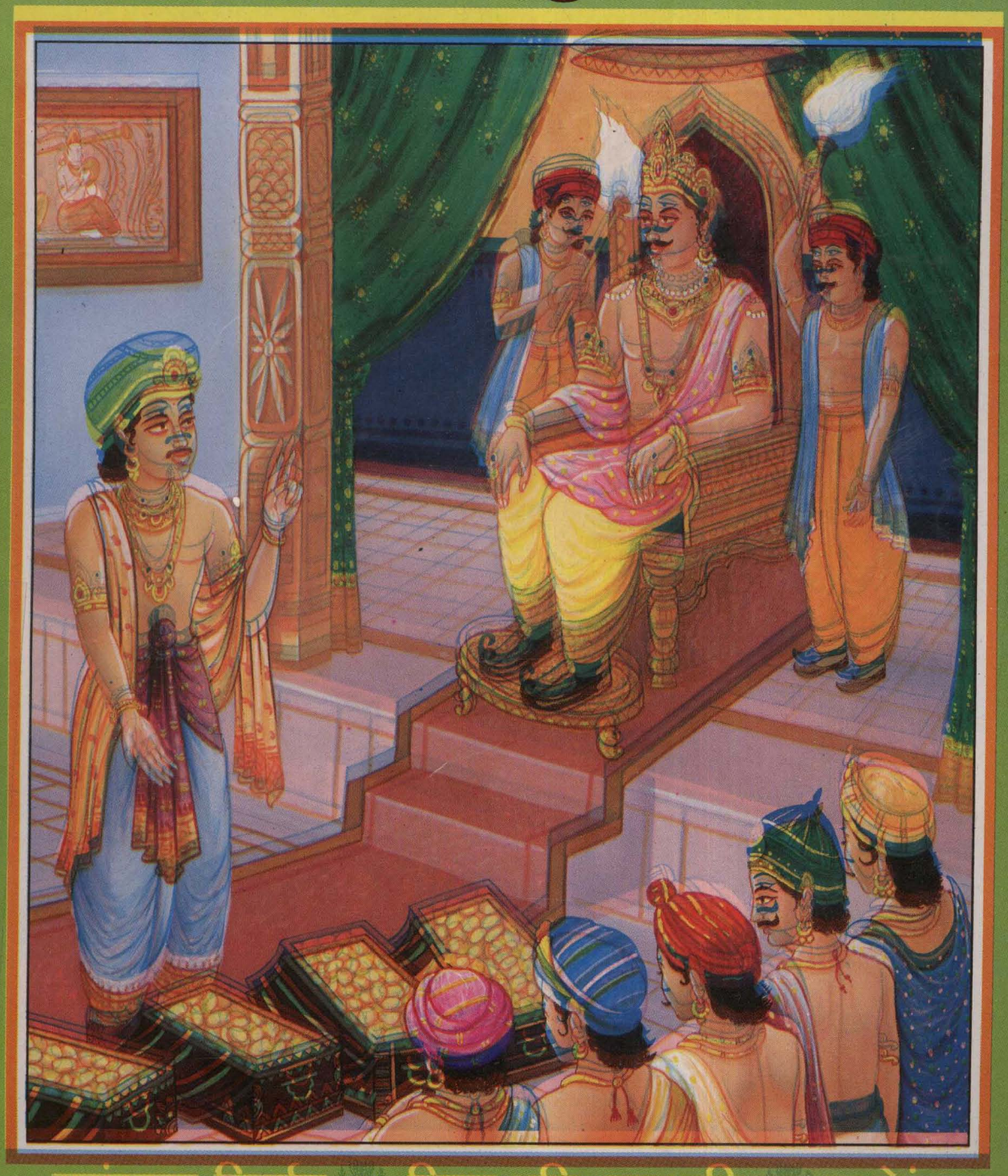

सुसंस्कार निर्माण | विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि | मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुद्धिनिधान अभयकुमार

संसार में जितने भी बल हैं, 'बुद्धि-बल' उनमें सर्वश्रेष्ठ है। अपने विकसित बुद्धि-बल के कारण ही दुबला-पतला मानव समूची सृष्टि पर नियंत्रण और शासन करता है। यद्यपि मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है, परन्तु सच यह है कि सभी मनुष्यों में बुद्धि-बल समान नहीं होता। संसार में कुछ ही ऐसे बुद्धिमान मानव होते हैं, जो अपने विलक्षण बुद्धि-बल से समाज और राष्ट्र की कठिन से कठिन समस्याओं का सुन्दर समाधान करके सबके साथ न्याय और सबका भला करते हैं। मगध का महामन्त्री अभयकुमार ऐसा ही विलक्षण बुद्धिमान था, जिसके पास था हर समस्या का समाधान।

जैन इतिहास के अनुसार अभयकुमार, मगध नरेश श्रेणिक की रानी नन्दा, जो स्वयं वणिक्-कन्या थी, का इकलौता आत्मज था। उसका बचपन पिता की छत्रछाया से दूर ननिहाल में बीता। जब उसे पता चला कि उसके पिता मगध के महाराजा हैं, तो वह अपनी माता के गौरव एवं स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा करता हुआ बड़े रहस्यमय ढंग से आत्म-सम्मान के साथ उनसे मिलता है। अपनी अद्भुत दूर-दृष्टि, चतुरता और सहज बुद्धिमानी के बल पर वह किशोरावस्था में ही मगध साम्राज्य का महामंत्री बन गया और राजा एवं प्रजा के लिए समान हित चिन्तक रहकर स्वयं धर्मनिष्ट जीवन जीता रहा।

अभयकुमार भगवान महावीर का परम भक्त और व्रतधारी श्रावक हो हुए भी राजनीति का चतुर खिलाड़ी था। उसके शासनकाल में मगध साम्राज्य का चहुँमुखी विकास हुआ। जैनधर्म की बहुमुखी प्रभावना हुई। अहिंसा और शाकाहार का विशेष प्रसार हुआ। नन्दीसूत्र की टीका और श्रेणिक चरित्र, अभयकुमार चरित्र आदि ग्रन्थों में अभयकुमार की बुद्धिमानी की कुछ शिक्षाप्रद एवं रोचक घटनाएँ ली गई हैं

—महोपाध्याय विनय सागर

—श्रीचन्द सुराना 'सरस'

लेखक : राष्ट्रसंत श्री गणेश मुनि शास्त्री

सम्पादक :	*प्रकाशन प्रबंधक :*	*चित्रांकन :*
श्रीचन्द सुराना 'सरस'	संजय सुराना	श्यामल मित्र

प्रकाशक

श्री दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. फोन : 0562–2851165

सचिव, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. फोन : 2524828, 2561876, 2524827

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बुद्धि निधान अभय कुमार

राजा श्रेणिक और नन्दा का पुत्र अभयकुमार पाठशाला में आचार्यों की प्रशंसा का पात्र होने के कारण सहपाठी उससे ईर्ष्या करने लगे थे। उसे नीचा दिखाने के लिए "बिना बाप का बेटा" कहकर चिड़ाना प्रारम्भ कर दिया। इस अपमान से तिलमिलाया हुआ अभय उदास होकर घर में बैठा था तभी उसकी माता नन्दा ने पूछा–

यह सुनकर नन्दा एकदम तड़फ उठी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बेटा! उनका नाम, पता तो मुझे भी नहीं मालूम। किंतु उन्होंने यहाँ से जाते समय कहा था कि मैं राजगृह का गोपाल हूँ। नगर में सबसे विशाल श्वेत भवन मेरा घर है, जिसके सोने के कंगूरे आसमान से बातें करते हैं।

यह सुनकर विलक्षण बुद्धि का धनी अभय एकदम उछल पड़ा।

माँ! क्या तू नहीं समझी, पिताजी ने संकेतों में सब कुछ तो बता दिया।

वह कैसे?

माँ! 'गो' कहते हैं पृथ्वी को, उसका पालन करने वाला गोपाल; अर्थात् नगर का राजा। विशाल श्वेत भवन आकाश से बातें करते कंगूरे यह सब राजमहल के चिन्ह हैं। अवश्य ही मेरे पिताजी राजगृह नगर के राजा होंगे।

नन्दा चुप होकर अभय के विश्लेषण पर विचार करने लगी।

माँ! क्या सोच रही हो? पिताजी का परिचय मिल गया। अब हम उनके पास चलेंगे।

बेटा! तेरे पिता यदि राजगृह के राजा हैं तो मैं उनकी रानी हूँ। उनका कर्त्तव्य है कि मुझे सम्मानपूर्वक ले जायें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभय ने अपनी माँ के विचारों का मतलब समझ लिया।

ठीक है माँ। हम सीधे राजगृह न जाकर वहीं पास के किसी ग्राम में रुकेंगे और वहाँ कुछ ऐसा काम करेंगे कि पिताजी स्वयं चलकर आयें और हम दोनों को ही सम्मानपूर्वक राजगृह ले जायें।

नन्दा को अपने पुत्र की विलक्षण बुद्धि पर विश्वास था। उसने अभय के साथ चलने की स्वीकृति दे दी।

अभय कुमार और नन्दा कई दिन की यात्रा के बाद राजगृह के समीप नन्दीग्राम में पहुँचे।

माँ, हम कुछ दिन यहीं रुकेंगे।

माता को साथ लेकर अभय एक अच्छी धर्मशाला में आकर ठहर गया। नहा-धोकर अच्छे कपड़े पहनकर वह गांव की तरफ निकला।

वहाँ भीड़ क्यों लगी है? चलकर देखना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभय कुमार ने पास पहुँचकर देखा—एक नीम के पेड़ के नीचे सभी ग्रामवासी इकट्ठे होकर विचार कर रहे हैं। गांव का मुखिया कह रहा था—

भाईयो! राजा श्रेणिक हम पर कुपित हो गया है, इसलिए उसने हमें एक असंभव और कठिन आज्ञा भेजी है कि गाँव के मीठे पानी के कुए को राजगृह पहुँचाओ, अन्यथा राजाज्ञा भंग करने का कठोर दंड दिया जायेगा। अब तो हमें गाँव छोड़कर कहीं दूर जाना पड़ेगा।

तभी अभय पीछे से सामने आ गया और मुखिया को नमस्कार करके बोला—

मुखिया जी, क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?

बेटा ! तुम कौन हो? तुम्हें पता नहीं राजा श्रेणिक जिस पर रुष्ट हो जाते हैं, उसे भगवान भी नहीं बचा सकते ··· ।

अभय कुमार ने हँसते हुए कहा—

मुखिया जी! मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है, फिर आपकी यह समस्या तो मैं ही चुटकियों में हल कर सकता हूँ।

वह कैसे?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभय ने ग्रामवासियों को समझाकर राजा श्रेणिक के पास भेजा। ग्रामवासी श्रेणिक के दरबार में पहुँचे और बोले–

महाराज! आपका आदेश सुनते ही कुआँ नगर में आने को तैयार हो गया। लेकिन गाँव का होने के कारण वह नगर की तड़क-भड़क से झिझकता है। कृपा करके अपने नगर का एक कुआँ हमारे ग्राम में भिजवा दीजिये तो, उसके साथ वह खुशी-खुशी चला आयेगा।

उत्तर सुनकर राजा श्रेणिक हैरान रह गये।

इन मूर्ख ग्रामवासियों में इतनी बुद्धि कहाँ से आ गई? जरूर यह उपाय किसी अन्य व्यक्ति के दिमाग की उपज है।

अपने विचार छुपाते हुए राजा ने कहा–

वाह! आप लोगों की बुद्धिमानी के क्या कहने? मुझे आशा है कि आप लोग इसी तरह दूसरी समस्याओं का भी समाधान कर दोगे।

गाँव के पंडितों ने सीना फुलाकर कहा–

राजन्! आप बताइये तो सही।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा श्रेणिक ने अपने सेवक को संकेत किया, वह एक मुर्गा ले आया। राजा ने मुर्गा उन ब्राह्मणों को देकर कहा–

यह सुनकर ब्राह्मणों के हृदय काँप गये। वे ग्राम वापस आये और मुखिया के सामने मुर्गे को रखकर राजा की आज्ञा सुना दी। मुखिया चिन्ता में पड़ गया। उसने अभय कुमार को बुलवाया और सारी बात बताई–

अभय ने मुखिया को एक युक्ति बताई–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऐसा ही किया गया

और मुर्गा द्वन्द्व युद्ध में कुशल लड़ाकू हो गया।

ग्रामवासी मुर्गे को लेकर श्रेणिक के पास आये।

महाराज! हमने आपके मुर्गे को युद्ध में प्रवीण कर दिया है। आप चाहें तो इसकी परीक्षा ले सकते हैं।

राजा ने तुरन्त एक लड़ाकू मुर्गा मँगवाया और उसके सामने छोड़ दिया। यह मुर्गा उस लड़ाकू मुर्गे पर टूट पड़ा।

क्वैं.... क्वैं.... क्वैं.....!

गाँव वाले मुर्गे ने उस लड़ाकू मुर्गे पर चौंच से ऐसे तीव्र प्रहार किये कि राजा का मुर्गा थोड़ी देर में ही लहूलुहान होकर धरती पर गिर पड़ा।

इन गाँव वालों में जरूर कोई बाहर का बुद्धिमान आया हुआ है, जो मेरी सब युक्तियों को काटता जा रहा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुखिया अभय कुमार के पास चलकर आया और नई समस्या बताई–

बेटे ! बालू की रस्सी गुंथना तो असम्भव है। इस बार राजा हमें अवश्य दण्ड देगा।

अभय कुमार सोचता रहा, फिर उसने गाँव के लोगों को कुछ समझा दिया और कहा–

तुम लोग दो-चार दिन बाद राजगृह चले जाना और जैसा मैंने कहा है, वैसा ही राजा से कह देना।

अभय की माता नन्दा को इन घटनाओं की सूचना मिलती रहती थी। एक दिन उसने अभय कुमार से कहा–

बेटा! अपने पिताजी की योजनाओं में बाधक बनने से तुझे क्या लाभ है?

माँ! यह तो बुद्धि का खेल है, तुम देखती जाओ, पिताजी भी जानें कि मैं भी उनका पुत्र हूँ।

चार-पाँच दिन बाद नन्दीग्राम के लोग श्रेणिक के दरबार में पहुँचे और बोले–

महाराज ! हम आपको बालू की रस्सी लाकर दे देंगे, लेकिन आप अपने राज भण्डार में से हमें बालू की रस्सी का एक टुकड़ा दिलवा दीजिए। उसी नमूने की रस्सी हम बना देंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रामवासियों का उत्तर सुनकर श्रेणिक को विश्वास होने लगा कि कोई विलक्षण बुद्धि व्यक्ति इनके ग्राम में आ गया है और उसकी योजनाएँ विफल कर रहा है। प्रकट में बोला–

उसने अपने गुप्तचरों को बुलाकर आदेश दिया–

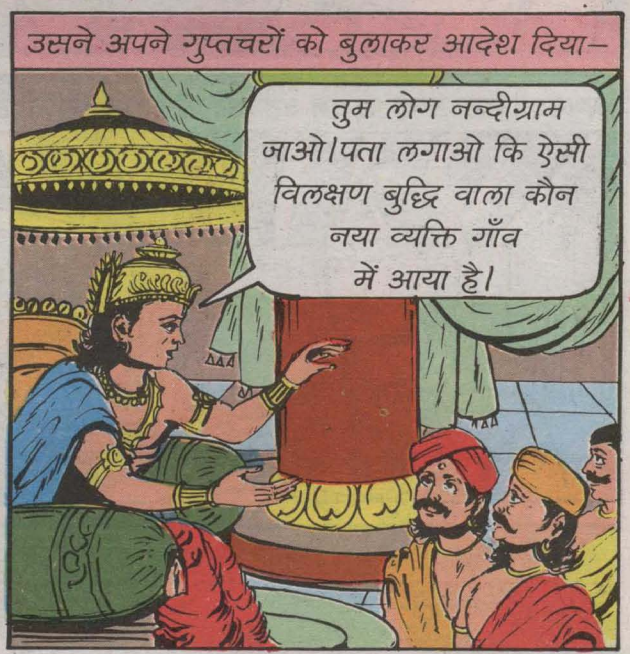

इधर गाँव वालों ने लौटकर अभय कुमार को बतलाया–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगले दिन छः-सात गुप्तचर ग्रामीण वेशभूषा बनाकर नन्दीग्राम जा पहुँचे। चतुर अभय कुमार ने इन्हें गाँव में देखा तो वह चौंक गया।

अभयकुमार पास के जामुन के पेड़ पर चढ़ गया।

वे लोग भी उसी पेड़ के नीचे आ बैठे। अभय कुमार ने उनकी बातें सुनीं तो उसे विश्वास हो गया कि ये राजा के गुप्तचर ही हैं। वह बोला—

इस प्रश्न का रहस्यार्थ गुप्तचर नहीं समझ सके। किन्तु वे बोले—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभय ने पके हुए जामुन तोड़े, हाथ से कुछ मसले और नीचे फैंक दिये। जामुनों से धूल चिपक गई। गुप्तचर फूँक से धूल उड़ाकर जामुन खाने लगे। अभय व्यंग से बोला–

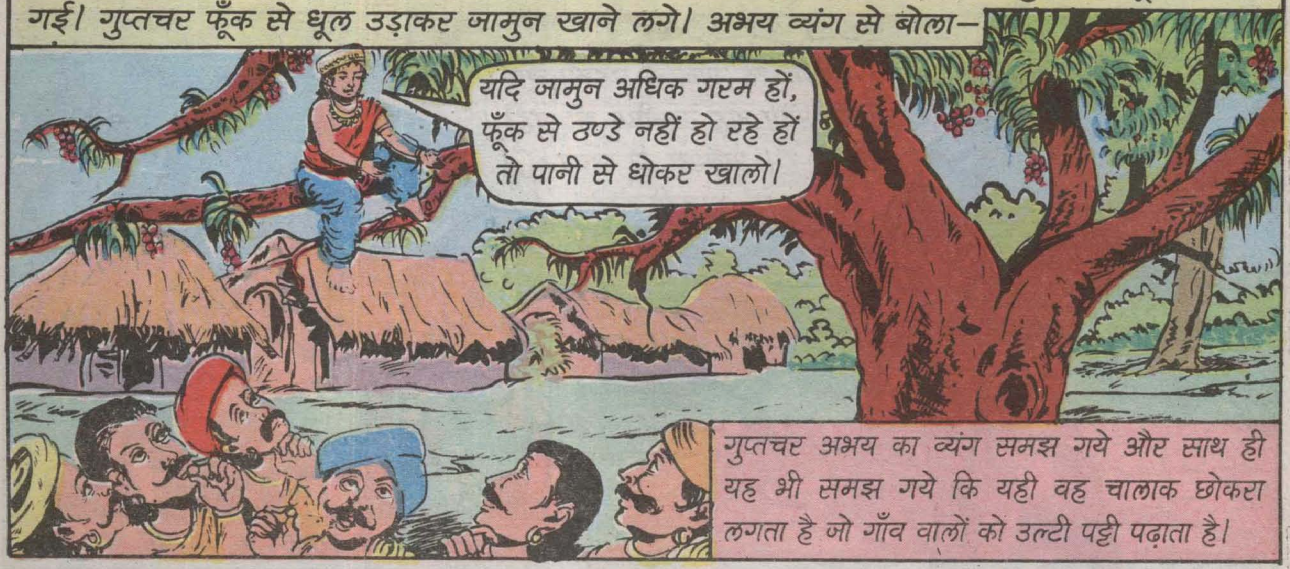

गुप्तचर अभय का व्यंग समझ गये और साथ ही यह भी समझ गये कि यही वह चालाक छोकरा लगता है जो गाँव वालों को उल्टी पट्टी पढ़ाता है।

गुप्तचरों ने ग्रामवासियों से सभी बातों का पता लगाया। अभय के बारे में विशेष जानकारी ली और राजगृह लौटकर श्रेणिक को पूरी घटना सुना दी।

श्रेणिक के मन में अभय से मिलने की उत्सुकता जाग गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेणिक ने एक योजना तैयार की और चुपचाप अपनी हीरे जड़ी अंगूठी नगर के एक गहरे सूखे कुएँ में गिरा दी।

अब मैं उस बालक की चतुरता की परीक्षा स्वयं अपने सामने ले लूँगा।

दूसरे दिन उन्होंने नगर में घोषणा करवा दी।

हमारे राजा को भी क्या अनहोनी सूझी है?

मगध सम्राट की हीरे जड़ी अंगूठी नगर के एक गहरे कुएँ में गिर गई है। जो व्यक्ति बिना कुएँ में उतरे उसे निकाल देगा उसे मगध राज्य का प्रधानमन्त्री बना दिया जायेगा।

यह घोषणा राजगृह और आस-पास के गाँवों में विशेष रूप से नन्दीग्राम में भी की गई।

लोग घोषणा सुनकर अपना भाग्य आजमाने कुएँ पर आने लगे और अँगूठी निकालने का प्रयास करने लगे। किंतु गहरा सूखा कुआ देखकर सभी की खोपड़ी चकरा जाती।

बिना उतरे अँगूठी निकालना असम्भव है।

बहुत गहरा कुआँ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इस तरह काफी दिन व्यतीत हो गये परन्तु कोई अँगूठी नहीं निकाल सका। एक दिन अभय राजगृह आया। उसने कुएँ के पास पहुँचकर सैनिकों से कहा–

मैं कुएँ में से अँगूठी निकाल सकता हूँ परन्तु महाराज श्रेणिक के सामने ही निकालूँगा।

सैनिकों ने तुरन्त राजा श्रेणिक को सूचित किया।

श्रेणिक तो आतुर बैठा था। वह तुरन्त रथ में बैठकर चला आया। और अभय से बोला–

बालक ! तुम कुएँ से अँगूठी निकालोगे? देर मत करो शीघ्र ही निकालो।

महाराज ! मुझे कुछ साधनों की आवश्यकता है।

क्या साधन चाहिए तुम्हें?

बस, थोड़ा-सा गाय का गोबर चाहिए।

तुरन्त गाय का गोबर लाकर दिया गया।

अभय ने अँगूठी को लक्ष्य करके गोबर कुएँ में फेंका।

गोबर सीधा अँगूठी पर गिरा, मिट्टी सहित अँगूठी गोबर में चिपक गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके बाद अभय ने सूखे घास-फूँस मँगाकर कुएँ में डलवा दिये और आग लगा दी। आग की गर्मी से कुछ ही समय में गोबर सूख गया। अब अभय ने कहा—

थोड़ी ही देर में कुआँ लबालब भर गया। सूखा गोबर पानी के ऊपर तैरने लगा।

अभय ने सूखे गोबर को पानी से निकाल लिया और उसे तोड़कर अँगूठी राजा श्रेणिक को दे दी। राजा श्रेणिक आश्चर्य के साथ देखने लगे।

महाराज श्रेणिक अभय की चतुराई से बहुत प्रभावित हुए। उसे अपने साथ रथ में बैठाकर राजसभा में ले आये। राजसभा में श्रेणिक ने अभय को अपने समीप ही आसन पर बैठाया और कहा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभय के शब्द सुनते ही श्रेणिक अतीत में खो गये। उन्हें नन्दा से कही हुई पुरानी बातें याद आ गईं।

ओह! यह शब्द तो मैंने वेणा तट में अपनी पत्नी नन्दा से कहे थे। यह अवश्य ही नन्दा का पुत्र हैं।

उसने एकदम भाव विह्वल हो अभय को सीने से लगा लिया।

तुम मेरे पुत्र हो। कहाँ है मेरी पत्नी नन्दा?

पिताश्री ! माँ पड़ोस के नन्दीग्राम में है।

श्रेणिक अभय कुमार को लेकर बड़ी धूम-धाम से नन्दीग्राम पहुँचे और नन्दा को सम्मानपूर्वक अपने महल में ले आये।

अब तुम दोनों सुखपूर्वक मेरे पास रहो।

श्रेणिक ने अभय का विवाह अपनी बहन सुसेणा की पुत्री मल्लिका के साथ कर दिया और अभय को राजगृह का प्रधानमंत्री बना दिया।

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो तोला मांस

एक बार राजा श्रेणिक ने विचार किया कि पूरे मगध देश में मांसाहार पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए। अपने सभासदों का विचार जानने के लिए श्रेणिक ने एक प्रश्न किया।

मनुष्य के लिए सस्ता, सुलभ और आरोग्यदायी भोजन कौन-सा है?

शाहकारी सामन्तों ने कहा

महाराज ! अन्न, फल आदि का भोजन आरोग्यदायी होने के साथ ही सस्ता और सबको सुलभ भी है।

हाँ, महाराज, इनसे मनुष्य के विचार भी सात्त्विक रहते हैं।

किन्तु मांसाहारी सामन्तों ने भिन्न मत व्यक्त किया।

महाराज ! अन्न और फल कहाँ सस्ता है, और ना ही सबको सुलभ है। अन्न उपजाने के लिए किसान को कितना कठोर परिश्रम करना पड़ता है?

हाँ, महाराज, फिर खेती बाड़ी तो पूर्णतः प्रकृति और भाग्य के अधीन है, कितने जोखिम उठाने पड़ते हैं किसान को।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराज मांसाहार सबके लिये सस्ता है, सुलभ है। एक बाण से हिरण आदि का शिकार किया कि पूरे परिवार का पेट भर जाता है।

सामन्तों के तर्क-वितर्क सुनकर राजा श्रेणिक ने मंत्री अभय कुमार की तरफ देखा—

क्यों अभय ! आपका क्या विचार है?

महाराज ! मैं इस विषय में पूरी जानकारी करके फिर आपको उत्तर दे सकूँगा?

लगभग १५ दिन बाद अभयकुमार आधी रात के समय रथ में बैठकर एक सामन्त के द्वार पर पहुँचा। द्वारपाल से कहा—

"मुझे इसी समय महासामन्त से मिलना है, उन्हें जगाकर मेरे आने की खबर करो।"

महामंत्री अभय के आने की सूचना पाते ही सामन्त हड़बड़ाकर उठा।

महामात्य ! अभी इस समय आप?

चेहरे पर उदासी लाते हुए अभयकुमार बोला—

अचानक ही महाराज किसी गंभीर रोग से ग्रस्त हो गये हैं। राज वैद्य का कहना है—किसी मनुष्य के हृदय का दो तोला ताजा मांस चाहिये। महाराज की जीवन रक्षा के लिए आपको इतना सा कष्ट करना पड़ेगा, बदले में आप चाहें तो एक लाख स्वर्ण मुद्रायें ले सकते हैं?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनते ही सामन्त पसीना पसीना हो गया, उसकी आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा।

अभय ने दो लाख स्वर्ण मुद्राओं का बक्सा अपने रथ में रखवाया और जाते-जाते बोला–

इसी प्रकार अभय दूसरे मांसाहारी सामन्तों के घर पर गया और महाराज की जीवन रक्षा के लिये दो तोले हृदय का मांस मांगा, किन्तु कोई भी सामन्त अपना मांस देने को राजी नहीं हुआ, बदले में जान बचाने के लिए किसी ने दो लाख किसी ने तीन लाख स्वर्ण मुद्रायें अभय को भेंट की।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरे दिन राजा श्रेणिक दरबार में आये। उन्हें स्वस्थ देखकर मांसाहारी सामन्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अभय ने सारा धन राजसभा में सामन्तों के सामने रखकर कहा–

मांस को सस्ता बताने वाले सामन्तों के सिर झुक गये।

अभय ने सामन्तों और सभासदों से कहा–

अभय की युक्तियों से प्रभावित होकर सभी सामन्तों ने एक स्वर से स्वीकार किया–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर चोर

महाराज श्रेणिक ने रानी चेलना के लिये बगीचे में एक खम्भे वाला सुन्दर महल बनवाया। उसमें आम के कुछ सदाबहार वृक्ष थे। उन पर बारह महीने फल लगते थे। एक दिन–

आश्चर्य है! कल तो इस डाल पर आम लगे हुये थे? आज एक भी आम नहीं है जरूर किसी ने चुरा लिये हैं।

माली ने तुरन्त राजा को खबर की।

राजा ने बगीचे के चारों ओर कड़ा पहरा लगा दिया। परन्तु दूसरे दिन सुबह देखा तो फिर आम चोरी हो गये थे।

ऐसे चालाक चोर को तुरन्त पकड़ना चाहिये नहीं तो नगर में उत्पात मचा देगा।

राजा ने अभय कुमार को बुलाकर कहा–

ऐसी विचित्र चोरी पहले कभी देखी न सुनी! इतने पहरे में से भी चोर आम चुरा कर ले जाता है? इसका पता लगाओ।

अभय कुमार वापस अपने महल में आकर सोचन लगा।

उद्यान से लगी एक मांतग बस्ती है। आज रात भेष बदलकर बस्ती में जाता हूँ शायद चोर का कोई सुराग मिल जाय।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रात के समय अभय मातंग बस्ती के चौराहे पर पहुँचा। वहाँ बस्ती के लोग एकत्रित होकर किस्से कहानी सुनाकर मनोरंजन कर रहे थे। अभय उनके बीच बैठ गया। एक बूढ़े व्यक्ति ने उसे बैठा देखा तो चौंककर पूछा–

भाई तुम कौन हो? यहाँ क्या कर रहे हो?

जरूर। जरूर।

मैं एक परदेशी हूँ। रात बिताने के लिए आपकी संगत में आकर बैठ गया हूँ। अगर आप आज्ञा दें तो मैं भी एक किस्सा सुना दूँ।

बूढ़े से आज्ञा लेकर अभय कहानी सुनाने लगा।

बसन्तपुर नगर में एक कन्या राजा के बगीचे से प्रतिदिन पूजा के लिये फूल तोड़कर ले जाती थी। एक दिन माली ने उसे फूल तोड़ते पकड़ लिया।

फूलों की चोरी करती है। चल मैं तुझे कारागार की हवा खिलाऊँगा।

आगे से नहीं तोड़ूंगी इस बार मुझे छोड़ दीजिए।

उसकी सुन्दरता को देखकर माली के मन में विकार आ गया। वह बोला–

अगर तू मेरी इच्छा पूरी कर दे तो मैं तुझे छोड़ दूँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुन्दरी पहले तो सकपकाई फिर साहस करके बोली–

अभी मैं कुंवारी हूँ। कामदेव की पूजा करने जा रही हूँ। तुम्हारे स्पर्श से अशुद्ध हो जाऊँगी। हाँ! यह वचन देती हूँ कि विवाह होने पर पहली रात तुम्हारे पास आ जाऊँगी।

अशुद्ध होने वाली बात माली की समझ में आ गई, वह बोला–

अपना वचन याद रखना।

प्राण देकर भी वचन का पालन करूँगी।

सुन्दरी ने उसे आश्वासन दिया और चल दी।

कुछ समय बाद सुन्दरी का विवाह विमल नामक युवक के साथ हो गया। मिलन की पहली रात्रि सुन्दरी ने अपने पति को माली वाली पूरी घटना बताई और आज्ञा माँगी। विमल अपनी पत्नी की स्पष्टता से बहुत प्रभावित हुआ उसने कहा–

जाओ मैं तुम्हारे वचनपालन में बाधक नहीं बनूँगा परन्तु वापस लौटकर मुझे सब कुछ सत्य बता देना।

सुन्दरी सोलह श्रृंगार में सजकर, माली के घर की ओर चल दी। मार्ग में उसे दो चोर मिले। आभूषणों को देखकर उनका मन ललचा गया। उन्होंने सुन्दरी को रोककर कहा–

हमें तुम्हारे आभूषण चाहिये। परन्तु हम पर-स्त्री को स्पर्श नहीं करते। इसलिये स्वयं अपने आभूषण उतारकर हमें दे दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुन्दरी निडर स्वर में चोरों से बोली–

भाई ! मैं किसी के वचन में बंधी हूँ। मुझे इसी रूप में जाना है जब वापस लौटूँगी तो आभूषण तुम्हें जरूर दे दूँगी।

सुन्दरी की निडरता से प्रभावित होकर चोरों ने उसका विश्वास करके, वापस आने का वचन लेकर छोड़ दिया।

चोरों से पीछा छूटा तो मार्ग में एक नर भक्षी दैत्य मिल गया। उसने सुन्दरी से कहा–

हे कोमलांगी ! मैं कई दिनों से भूखा हूँ। आज मैं तुम्हें खाऊँगा।

सुन्दरी ने मीठे शब्दों में दैत्य से कहा–

हे दैत्यराज ! अगर मेरा शरीर आपके काम आ जाये तो मेरा सौभाग्य ही होगा लेकिन अभी मुझे जाने दीजिये मैं किसी के वचन में बँधी हूँ।

दैत्य ने भी सुन्दरी की बात का विश्वास करके आगे जाने दिया।

सुन्दरी माली के घर पहुँची और उसे अपने पुराने वचन की स्मृति दिलाई। माली को अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई वह बोला–

बहन ! मुझे क्षमा कर दो। मैं अपनी गन्दी भावना पर बहुत शर्मिन्दा हूँ। आप जैसी देवी की तो पूजा करनी चाहिये।

माली ने सुन्दरी को आदर के साथ विदा कर दिया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वापसी में सुन्दरी दैत्य के पास पहुँची।

अब सुन्दरी चोरों के पास पहुँची तो उसकी सत्यनिष्ठा देखकर चोरों का भी मन बदलने लगा वह बोले–

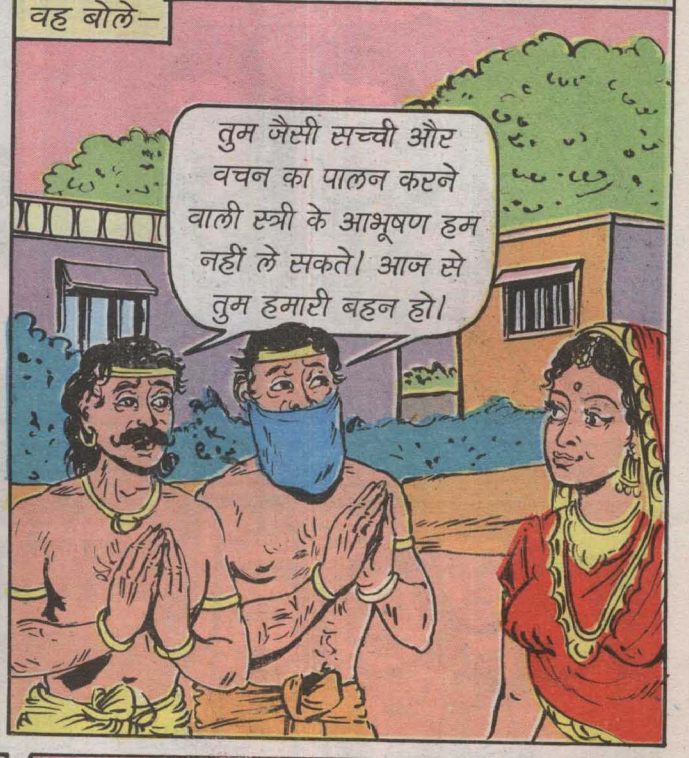

सुन्दरी ने वापस घर पहुँचकर अपने पति को सारी घटना सुना दी।

कहानी समाप्त करके अभय ने मातंगों से पूछा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रियाँ तुरन्त बोल उठीं–

सुन्दरी का साहस सर्वश्रेष्ठ है।

वृद्धों ने दैत्य को सर्वश्रेष्ठ बताया।

भूखा होने पर भी उसने सुन्दर, कोमलांगी स्त्री को नहीं खाया। दैत्य का त्याग प्रशंसा योग्य है।

युवकों ने कहा–

कोई भी पुरुष अपनी पत्नी को अन्य पुरुष के पास जाने की अनुमति नहीं देगा। सुन्दरी के पति का त्याग और विश्वास सर्वश्रेष्ठ है।

तभी एक व्यक्ति उठा और अभय से बोला–

क्या वे चोर सर्वश्रेष्ठ नहीं हैं? जिन्होंने सरलता से प्राप्त लाखों रुपये के आभूषणों को त्याग दिया।

अभय उसका जबाव सुनकर चौंक गया। उसने सोचा–

इतने लोगों की भीड़ में एक यही चोरों का पक्ष ले रहा है। बस – यही चोर है।

उस व्यक्ति का नामपता पूछकर अभय रात में ही वापस राजमहल में आ गया।

Jain Education International. For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगले दिन अभय ने उस मातंग को पकड़कर महल बुलवा लिया और फटकारा। मातंग अभय को वहाँ देखकर पहचान गया और घबराहट में उसने अपना अपराध कबूल कर लिया।

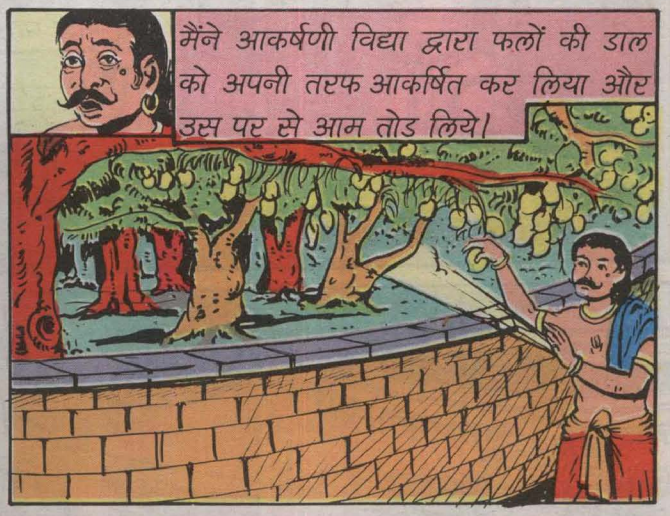

अभय ने मातंग को महाराज श्रेणिक के सामने प्रस्तुत किया। श्रेणिक ने चोर को देखते ही मृत्यु दण्ड की सजा सुना दी। अभय ने श्रेणिक को सुझाव दिया।

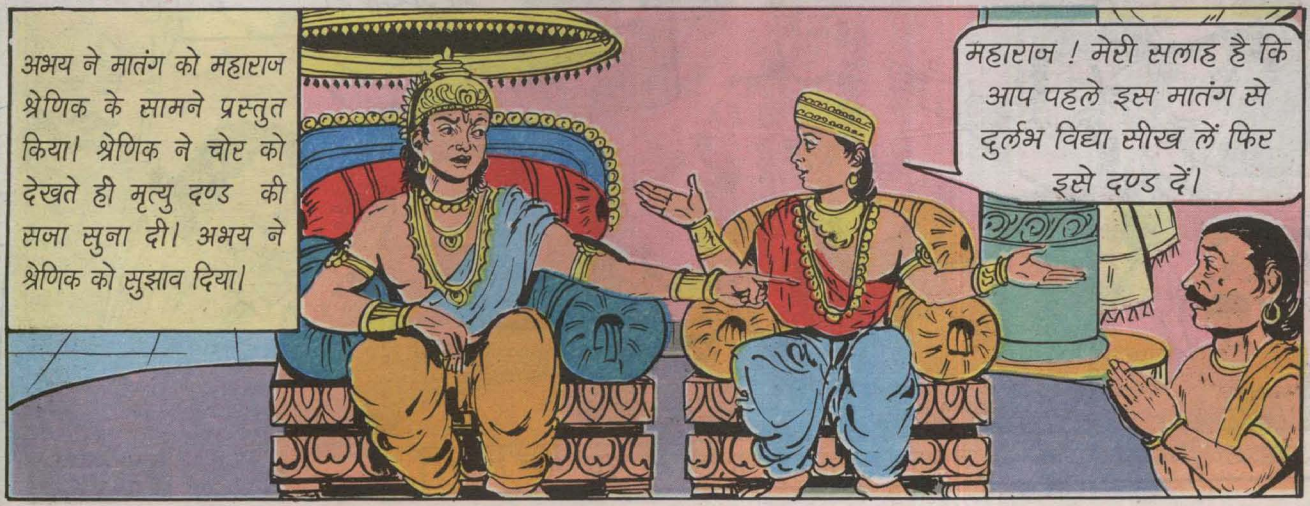

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेणिक को अभय की बात पसन्द आई। उन्होंने मातंग से आकर्षणी विद्या सीखना प्रारम्भ कर दिया। मातंग राजा के सामने नीचे बैठ गया और राजा को मंत्र पाठ कराने लगा। परन्तु राजा बार-बार मंत्र भूल जाते। उन्होंने गुस्से में मातंग से कहा–

श्रेणिक अभय का इशारा समझ गये। उन्होंने मातंग को सिंहासन पर बैठाया और स्वयं उसके सामने विनय के साथ नीचे खड़े हो गये। फिर उन्होंने मन्त्र दोहराया तो–

विद्या सीखने से श्रेणिक प्रसन्न हो गये।

और उन्होंने मातंग को बहुत-सा धन देकर गरीबी से मुक्त कर दिया।

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काल शौकरिक कसाई

राजगृह में काल शौकरिक कसाई रहता था। वह प्रतिदिन पाँच सौ भैंसों का वध करता था।

राजा श्रेणिक ने उसका हिंसा का धन्धा छुड़ाने के लिए बहुत प्रयत्न किये। यहाँ तक कि उसे प्राण दण्ड का भय दिखाया और एक गहरे सूखें कुएँ में डाल दिया। परन्तु वहाँ बैठकर भी वह मिट्टी के भैंसे बनाकर लकड़ी के तिनके से उनकी गर्दन तोड़कर सोचता—

उस बात से राजा श्रेणिक का मन बहुत खिन्न हुआ। उन्होनें अभय कुमार से कहा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपनी योजनानुसार अभय ने सुलस से मैत्री कर ली। अभय सुलस के घर आने जाने लगा वह उससे दया धर्म और करुणा की बातें करता। भगवान महावीर के उपदेशों के विषय में बताता।

धीरे-धीरे सुलस पर अभय की संगत का असर होने लगा। उसने वधशाला जाना बन्द कर दिया। उसके हृदय में मूक जानवरों के प्रति करुणा उत्पन्न हो गई। वह पूरी तरह अहिंसा धर्म का पालन करने लगा।

एक दिन काल शौकरिक को एक भयानक रोग हो गया। वह वेदना से चीखने चिल्लाने लगा। सुलस ने वेदना कम करने के लिए पिता के शरीर पर सुगन्धित शीतल चन्दन आदि का लेप लगाया परन्तु पीड़ा कम नहीं हुई।

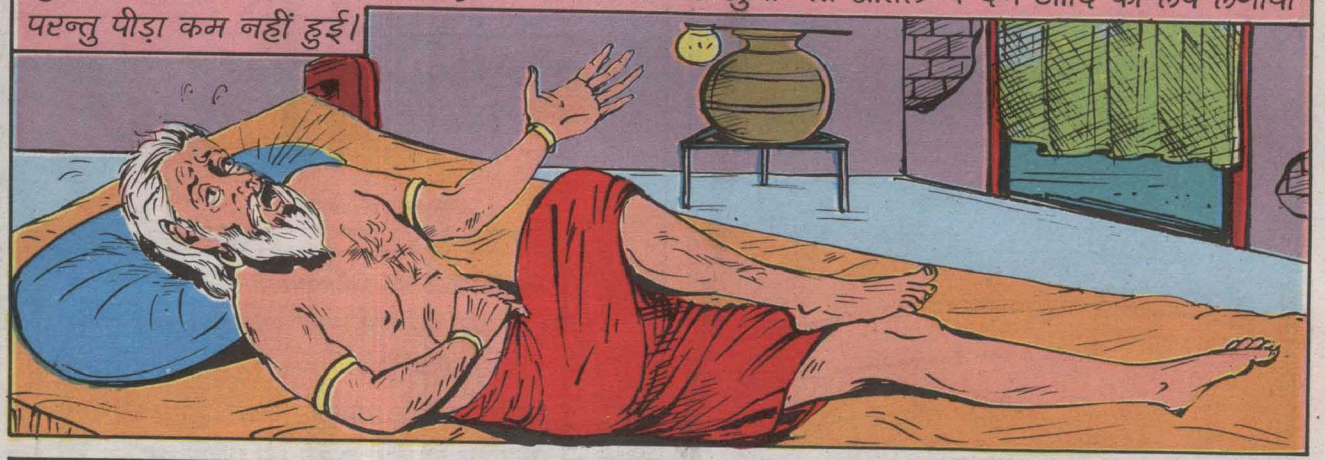

निराश सुलस अभय के पास पहुँचा। पिता की दशा बताकर शान्ति का उपाय पूछा। अभय ने कहा–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ दिनों बाद काल शौकरिक की मृत्यु हो गई। सुलस के जाति बन्धु उसे उसके पिता का स्थान लेने के लिए विवश करने लगे। उन्होंने सुलस के घर के सामने एक भैंसा बांध दिया और उसके हाथ में तलवार देकर कहा–

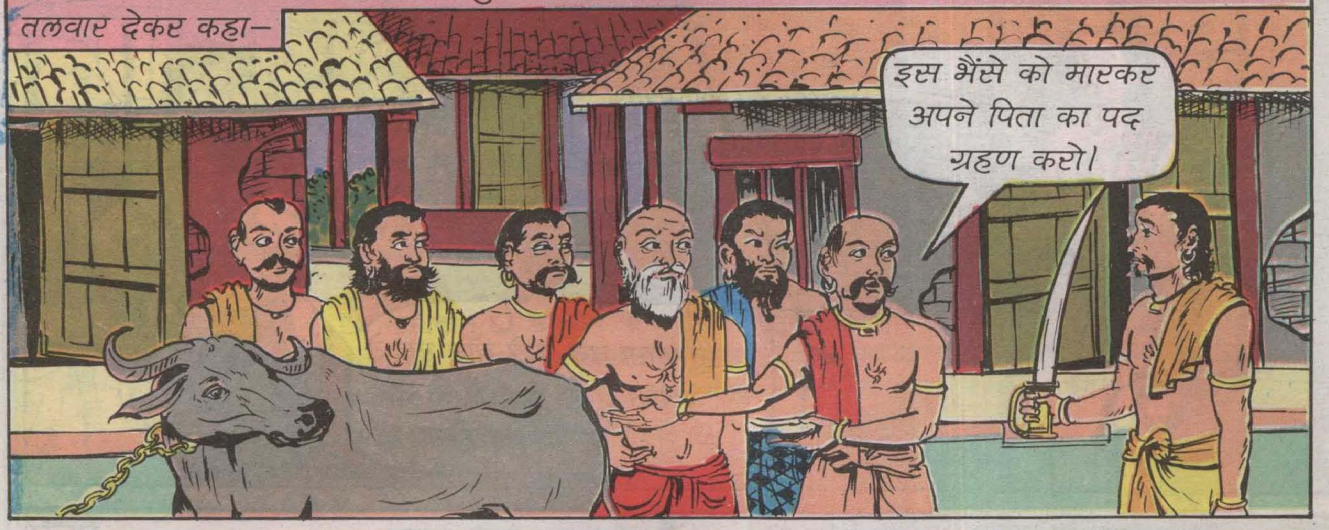

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुलस ने चारों ओर देखा और खड्ग का प्रहार अपनी जंघा पर किया। जंघा से रक्त का फुव्वारा छूट पड़ा।

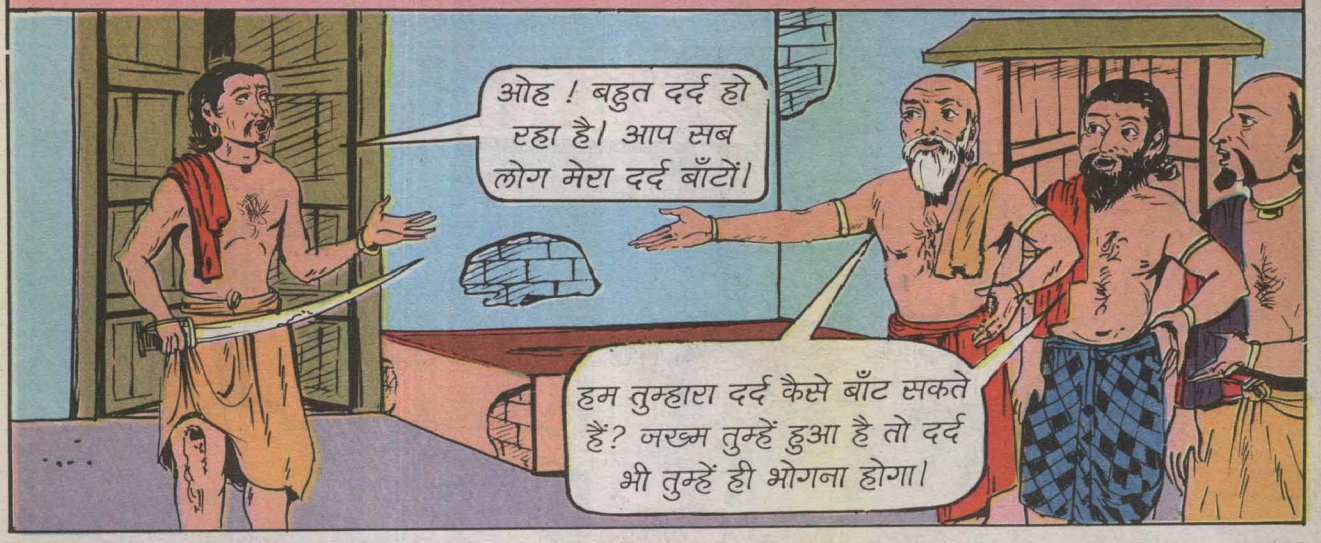

सुलस ने व्यंगपूर्ण स्वर में कहा–

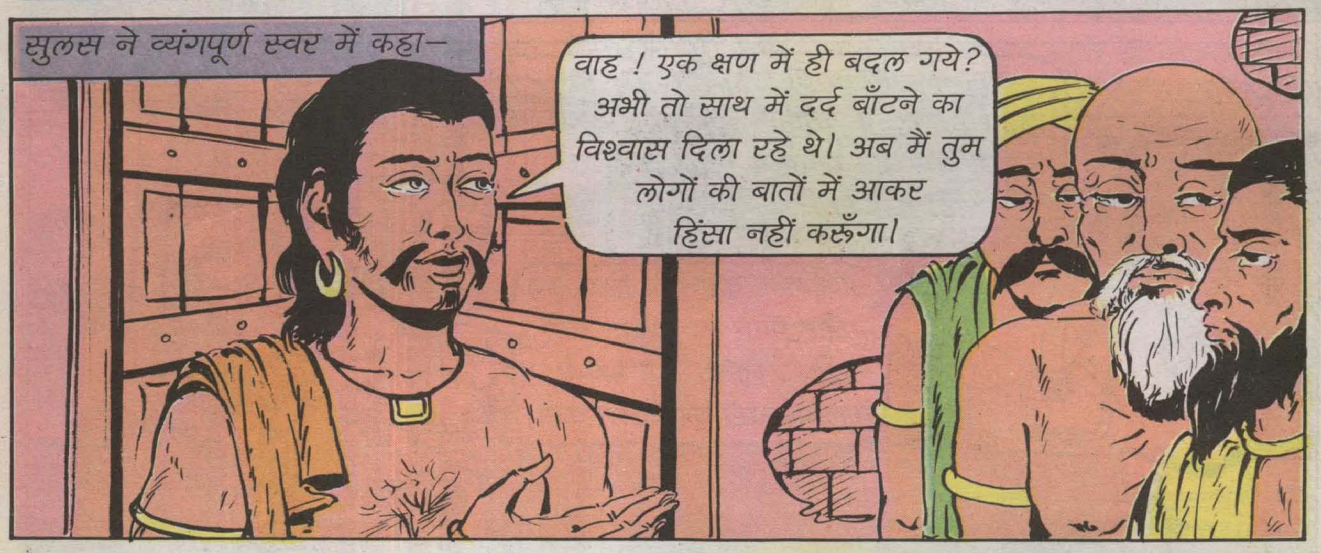

तब तक अभय को इस घटना की सूचना मिल चुकी थी वह आया। उसने सुलस के घाव पर मलहम पट्टी की और बोला–

इस घटना के बाद सुलस ने अभय के कहने पर श्रावक धर्म ग्रहण कर लिया। अभय ने अपनी बुद्धि से एक कसाई के पुत्र को अहिंसक बना दिया।

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक,

रोचक सचित्र कहानियाँ।

♦ 55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 1100.00 रुपया। ♦ 33 पुस्तकों के सैट का मूल्य : 640.00 रुपया।

प्रसिद्ध कड़ियाँ

❑ क्षमादान ❑ भगवान ऋषभदेव ❑ णमोकार मन्त्र के चमत्कार ❑ चिन्तामणि पार्श्वनाथ ❑ भगवान महावीर की बोध कथायें ❑ बुद्धिनिधान अभयकुमार ❑ शान्ति अवतार शान्तिनाथ ❑ किस्मत का धनी धन्ना ❑ करुणानिधान भगवान महावीर ❑ राजकुमारी चन्दनबाला ❑ सती मदनरेखा ❑ सिद्धचक्र का चमत्कार ❑ मेघकुमार की आत्मकथा ❑ युवायोगी जम्बुकुमार ❑ राजकुमार श्रेणिक ❑ भगवान मल्लीनाथ ❑ महासती अंजनासुन्दरी ❑ करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती) ❑ भगवान नेमिनाथ ❑ भाग्य का खेल ❑ करकण्डू जाग गया ❑ जगत् गुरु हीरविजय सूरि ❑ वचन का तीर ❑ अजातशत्रु कूणिक ❑ पिंजरे का पंछी ❑ धरती पर स्वर्ग ❑ नन्द मणिकार ❑ कर भला हो भला ❑ तृष्णा का जाल ❑ पाँच रत्न।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : 20/-

चित्रकथाएँ मँगाने के लिए निम्न पते पर एम.ओ. या ड्राफ्ट भेजें–

Shree Diwakar Prakashan

A-7, Awagarh House, Opp. Anjna Cinema, M. G. Road, Agra-282 002. Ph. : (0562) 2851165.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम, मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक, रोचक सचित्र कहानियाँ।

55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 1100.00 रुपया। 33 पुस्तकों के सैट का मूल्य : 660.00 रुपया।

प्रत्येक चित्रकथा का मूल्य : 20.00 रुपया।
(अंग्रेजी तथा गुजराती में भी उपलब्ध)

प्रसिद्ध कड़ियाँ

- क्षमादान
- भगवान ऋषभदेव
- णमोकार मन्त्र के चमत्कार
- क्षमावतार भगवान पार्श्वनाथ
- भगवान महावीर की बोध कथायें
- बुद्धिनिधान अभयकुमार
- शान्ति अवतार शान्तिनाथ
- किस्मत का धनी धन्ना
- करुणानिधान भगवान महावीर
- राजकुमारी चन्दनबाला
- सती मदनरेखा
- सिद्धचक्र का चमत्कार
- मेघकुमार की आत्मकथा
- युवायोगी जम्बुकुमार
- राजकुमार श्रेणिक
- भगवान मल्लीनाथ
- महासती अंजनासुन्दरी
- मुनि हरिकेष बल
- भगवान नेमिनाथ
- अमृत पुरूष गौतम
- आर्य सुधर्मा
- तीर्थ रक्षक भोमियाजी
- सम्राट् विक्रमादित्य
- अजातशत्रु कूणिक
- आर्य स्थूलभद्र
- सम्राट् कुमारपाल
- हेमचन्द्राचार्य
- आचार्य भद्रबाहु
- महाश्रमण केशीकुमार
- तृष्णा का फल (कपिल केवली)
- उदायन और वासवदत्ता

चित्रकथाएँ मँगाने के लिए ड्राफ्ट/एम.ओ. श्री दिवाकर प्रकाशन के नाम से भेजें।

श्री दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002.
फोन : (0562) 2851165, 931920 3291

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org